

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में 11वां संरक्षित कृषि आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ।

अन्तर्राष्ट्रीय मक्का और गेहूँ सुधार केन्द्र (सिमिट), और बोरलॉग इन्सटीट्यूट फॉर साऊथ एशिया (बीसा) व केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के तत्वाधान में 11वां संरक्षित कृषि आधारित आधुनिक प्रशिक्षण "गेटवे फॉर प्रोडक्टिव एंड सस्टेनेबल क्रापिंग सिस्टम" का आयोजन सोमवार दिनांक 6 दिसम्बर 2021 को सीएसएसआरआई, करनाल में आरम्भ किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 18 दिसम्बर तक करनाल व लुधियाना में चलेगा। इस प्रशिक्षण में भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली के कृषि विज्ञान केन्द्र, अनुसंधान संस्थान, अनुसंधान परियोजनाएं व कृषि विश्व विद्यालयों के कुल 16 वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ, सहायक प्रोफेसर व विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में महाराणा प्रताप उद्यानिकी विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा. समर सिंह भाकृअनुप-केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डा. पी. सी. शर्मा व इस प्रशिक्षण के समन्वयक प्रधान वैज्ञानिक डा. एम. एल. जाट, सीमिट के द्वारा उद्घाटन किया गया।

मुख्य अतिथि डा. समर सिंह ने कहा कि कृषि क्षेत्र खाद्य सुरक्षा का मुख्य आधार है। कृषि खाद्य सुरक्षा द्वारा ही मनुष्यों की दिनचर्या व आजीविका को बदला जा सकता है। 90वें दशक में खाद्य उत्पादन अब की तुलना में काफी कम था लेकिन कृषि क्षेत्र में हुए विकास द्वारा इसको बढ़ाया जा रहा है साथ ही प्राकृतिक संसाधनों को द्वारा होने वाले नुकसानों को भी कम किया जा रहा है जिसमें कलाईमेट स्मार्ट कृषि का मुख्य योगदान है। इस संरक्षित खेती द्वारा पिछले दो दशकों से शून्य जुताई पद्धति के द्वारा गेहूँ में मंडूसी से होने वाले नुकसान को काफी कम किया गया है। शून्य जुताई के साथ फसल अवशेष प्रबंधन द्वारा ही हम मंडूसी जैसी खरपतवारों को कम कर सकते हैं व पानी व मजदूरी की भी बचत कर सकते हैं।



विशिष्ट अतिथि एवं संस्थान के निदेशक, डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने कहा कि संरक्षित खेती एक प्रकार की बहुआयामी पहल है जिसके द्वारा हम अपनी उपज को बढ़ा सकते हैं। धान-गेहूँ फसल हमारे गंगा मैदानी क्षेत्र की मुख्य फसलें हैं लेकिन अधिक खाद-पानी के कारण फसल उत्पादकता में काफी कमी आ गई है। भारत में 6.23 मिलियन हैक्टर लवणग्रस्त मृदाएं हैं जो निन्तर बढ़ती जा रही है जिसके कारण मृदा स्वास्थ्य में गिरावट, फसल उत्पादकता में कमी, भू-जल का खराब होना व मौसम में बदलाव मुख्य कारण है। इन कारणों को संरक्षित खेती को अपनाकर ही कम किया जा सकता है जिसमें शून्य जुताई, फसल चक्र, फसल अवशेष प्रबंधन व फसल विविधिकरण मुख्य सिद्धांत हैं। हमने 2009 से सिमित के साथ मिलकर इस पर कार्य कर रहे हैं साथ ही किसानों को इन विधियों के बारे में प्रशिक्षण दे रहे हैं। घटते भूजल को ध्यान में रखते हुए हम उपसतही ड्रिप सिंचाई के द्वारा जल का कम उपयोग व फसल की उपज को बढ़ाना हमारा मुख्य उद्देश्य है, जिसकी वजह से किसानों को काफी लाभ मिल रहा है। हमारी फसल का मुख्य स्ट्रोत, मृदा कार्बनिक पदार्थ है जो दस वर्ष पहले 0.4 से 0.5 प्रतिशत था लेकिन अब संरक्षित खेती के बाद यह 0.9 व उससे अधिक हो गया है। जिसके कारण मृदा के भौतिक व रासायनिक कारकों में काफी वृद्धि आ गई है। जिससे 20 प्रतिशत नाइट्रोजन व पानी की बचत कर रहे हैं साथ ही फसल के दानों में प्रोटीन की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी हो रही है।

डा. एम. एल. जाट ने कहा कि संरक्षित खेती पर हम काफी वर्षों से काम कर रहे हैं साथ ही महिलाओं को संरक्षित खेती के बारे में प्रशिक्षण देना हमारा मुख्य उद्देश्य है। इस प्रशिक्षण की शुरुआत 2010 में पी.ए.यू., बीसा, सी.एस.एस.आर.आई के साथ मिलकर की। आज तक हमने इस प्रशिक्षण से 500 से ज्यादा प्रशिक्षणार्थियों को संरक्षित खेती के बारे में जानकारी दी है। साथ ही उच्चतम प्रकार के संसाधनों जैसे हैप्पीसीडर, लेजर लैंड लेवलर, टू-वहील ट्रैक्टर के बारे में प्रशिक्षण दिया। संरक्षित खेती का आज हम यह 11वां आधुनिक प्रशिक्षण शुरू करने जा रहे हैं। हमारा मुख्य उद्देश्य टिकाऊ खेती, एस. आई. पी. प्रोग्राम के तहत भारत के संस्थाओं, विश्वविद्यालयों में संरक्षित खेती के बारे में प्रशिक्षण देना व इसके सिद्धांतों को बढ़ाना है। पिछले 10 आधुनिक प्रशिक्षणों में हमने एन. ए. आर. एस., सी. जी. आई. ए. आर., एन. जी. ओ., ए. आर. आई व प्राइवेट सैक्टर के युवा पुरुष व महिलाओं को संरक्षित खेती पर प्रशिक्षण दिया है। अभी तक हमने संरक्षित खेती पर अन्तर्राष्ट्रीय देशों जैसे चीन, इरान, अफगानिस्तान, बांग्ला देश और भारत के साथ मिलकर इस प्रशिक्षण के द्वारा संरक्षित खेती की तकनीकों को बढ़ाया गया है। मंच संचालन प्रधान वैज्ञानिक डा. एच. एस. जाट ने किया।